दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को धार (इंदौर) मध्य प्रदेश में जनसभा में श्री चरण सिंह का भाषण

.....

बहनो और दोस्तो,

आज, ये मेरा पहला मौका है आपके इस इलाके में आने का। मैंने आपके इलाके का नाम तो सुना है और राजा भोज का नाम तो हिंदुस्तान के सभी लोगों ने सुना है।

अभी जो हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी पंचायत है, जिसको लोकसभा कहते हैं, उसके लिए चुनाव होने वाले हैं। उसमें तीन बड़ी पार्टियां इलेक्शन के लिए खड़ी हुई हैं, कुछ और भी हैं छोटी–मोटी। लेकिन तीन बड़ी कही जा सकती हैं। एक तो इंदिरा जी की कांग्रेस, और एक जनसंघ और संगठन कांग्रेस मिलकर एक पार्टी है, जिसका नाम जनता पार्टी है, जिसके लीडर हैं जगजीवन राम। एक लोकदल है, जिसमें मैं और मेरे साथी काम कर रहे हैं। तो, ये मीटिंग लोकदल की तरफ से आयोजित की गयी है, ताकि आपको ये मशविरा दिया जा सके कि आप लोकदल के प्रत्याशियों को अपना वोट दें।

सवाल ये उठता है लोकदल और कांग्रेस, दोनों का हमारा गठन है। तो इस गठन की तरफ से जो कोई उम्मीदवार खड़ा हो, तो मैं आपको ये परामर्श देने के लिए आया हूं कि आप इस गठन के उम्मीदवार को अपना वोट दें। सवाल उठेगा मन में आपके, उठना चाहिए,कि क्यों? औरों के मुकाबले में आप इस गठन को अपनी राय क्यों दें। वो इसलिए कि हमारे इस पार्टी के पास या इस संगठन के पास, देश की जो चार बड़ी समस्याएं हैं उनका समाधान है, उनका ईलाज है, दूसरों के पास नहीं। अब आपके पास दूसरी पार्टी के लोग भी आयेंगे, नेतागण आयेंगे, प्रतिनिधिगण आयेंगे, उनके भाषण आप सुनेंगे, तो ठीक है, वो जजबात उभारेंगे, दूसरों को गालियां भी देंगे। मेरी कोशिश होगी कि दूसरों को गाली न दूं और जजबात को न उभारूं। मैं आपके सामने केवल यह बतलाना चाहता हूं कि समस्याएं क्या हैं? ठण्डे दिल से और उनका ईलाज क्या मुमकिन है ?

चार बड़ी समस्याएं देश के सामने हैं। गरीबी ही नहीं, बढ़ती हुई गरीबी, बेरोजगारी ही नहीं बल्कि बढ़ती हुई बेरोजगारी। गरीब और अमीर की आमदनी का अन्तर ही नहीं, बल्कि उस अन्तर का और चौड़ा होते जाना, बराबर जैसे समय बीत रहा है और चौथा भ्रष्टाचार, बेईमानी रिश्वतखोरी राजकर्मचारियों में ही नहीं उससे ज्यादा राजनीतिक नेताओं के अन्दर। ये चार बड़ी समस्याएं हैं देश के सामने। अगर ये हल नहीं हुईं, तो ये हिन्द महासागर में डूब जाएगा, देश। इसको कोई बचाने वाला नहीं। (तालियां)

मैं आपके सामने जो समाधान रखने वाला हूं, वो सिर्फ समाधान वो ही हैं जो महात्मा जी के बताए हुए हैं। मेरी कोई नई बात नहीं। जब इंदिरा जी ने ये राजपाठ संभाला था, सन् 66 में तो उससे पहले साल, 125 देशों में से हमारे देश का नम्बर था 85 वां। 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब। 8 साल बाद सन् 73 में हमारा नम्बर खिसक कर आ गया 104, 103 देश मालदार और 21 देश गरीब। उसके 3 साल बाद सन् 1976 में हमारा नम्बर हुआ 111 वां। सिर्फ 14 देश गरीब और 110 देश मालदार और 14 देश गरीब हैं। वो ऐसे हैं जिनके नाम आपने बहुत ही कम सुने होंगे। 4 देश जरूर हैं जिनके नाम सुने हैं, छोटे–छोटे देश भूटान, नेपाल, बर्मा, बंगलादेश और बाकी 10 देश और रह गए, 125 में जिनके

नाम मैं नहीं जानता हूं। जिनका इतिहास में नाम नहीं है, जिनका भूगोल में नाम नहीं पाएगा, लेकिन आजाद हो गए, इसलिए देश कहलाते हैं।

तो गरीबी का ये हाल है। हमारा जो प्लानिंग कमीशन है सरकारी, उसने पिछले साल अनुमान लगाया था कि 48 फीसदी आदमी, 100 में 48, हमारे देश के अन्दर ऐसे हैं, जिनको यथेष्ठ भोजन नहीं मिलता है। सूखी रोटी भी नहीं मिलती है जिससे कि वो अपने स्वास्थ्य को कायम रख सकें। इनमें 80 फीसदी आदमी गांव में रहते हैं, इसलिए गांव में ही अधिकतर गरीबी है। लेकिन बड़े–बड़े शहर जिनमें बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं हैं और बड़े–बड़े महल हैं। जिनको अंग्रेजी में स्काई स्क्रेपर्स कहते हैं, यानि दिल्ली और बम्बई। इन महलों के पीछे भी, इन बड़ी–बड़ी इमारतों के पीछे भी गरीब आदमी रहते हैं। दिल्ली के अन्दर 26 फीसदी ऐसे ही गरीब हैं, जो गरीबी की रेखा के नीचे रहते हैं, और बम्बई में इससे भी ज्यादा हैं।

तो, ये हमारी गरीबी का हाल है जो दुनिया के किसी और देश में नहीं और जो मैंने कहा सबसे बड़ी दुखदायी बात ये है कि जैसे–जैसे समय बीतता जा रहा है, गरीबी कम होने की बजाय गरीबतर और गरीबतम हम होते जा रहे हैं। दूसरी बात है बेरोजगारी की। शहर के अन्दर हमारे पढ़े–लिखे लड़के हैं। मारे–मारे फिरते हैं – एम0ए0 पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, एम0एस0सी0 पास, बिजली का काम सीखे हुए हैं, इंजीनियरिंग का काम सीखे हुए हैं, साईंस की कोई और डिग्री लिये हैं। जो कामदिलाऊ दफ्तर हैं जिनको कहते हैं एम्पलायमेंट एक्सचेंज, जो हर शहर में कायम है। जिसमें नाम लिखे जाते हैं, जो लोग रोजगार के उम्मीदवार हैं। तो, जब जनता पार्टी ने चार्ज लिया था, तब एक करोड़ दो लाख आदमी ऐसे थे जिनके नाम दर्ज थे रजिस्टरों में। और अब जनता पार्टी ने चार्ज छोड़ा है तो एक करोड़ 35 लाख।

अब अंदाज लगाओ एक करोड़ 35 लाख पढ़े–लिखे लड़के कुछ उनमें बे–पढ़े भी हैं लेकिन बहुत कम बी0ए0 पास, एम0ए0 पास और मैं जनता हूं कि एक आध ऐसे हैं जो लोग मुझसे मिले हैं जो थ्रो आउट बराबर हर क्लास में प्रथम श्रेणी में आते रहे हैं, वो लड़के मारे–मारे फिरते हैं। ऐसे अनेक लड़के अपने देश से पास करके दूसरे देशों में नौकरी करने के लिए जाते हैं। उनको विद्या दी गयी यहां, उन्होंने डिग्री हासिल की, इन गरीब लोगों के खर्चे से। इनका शास्त्रियों ने हिसाब लगाया कि 65 किसानों की एक साल की आदमनी कहो या एक किसान की 65 साल की आमदनी लगती है एक लड़के को बी0ए0 पास कराने में गवर्नमेंट का इतना खर्चा होता है।

तो, इस गरीब मुल्क का इतना खर्चा करने के बाद वो दूसरे मालदार मुल्कों में जाकर सेवा करते हैं और अपनी ईमानदारी से उनके विकास में योगदान देते हैं। अब ये हजारों लड़के हमारे पढ़ने के लिए चले जाते हैं अमरीका, इंग्लैंड, जर्मनी। वहां से लौटते नहीं, लौटने को तबीयत नहीं चाहती। कोई किसी कारणवश यहॉ आता है यहां नौकरी करने के लिए, दो साल बाद फिर वापिस चला जाता है निराश होकर। ये तो शहर के पढ़े–लिखे लड़कों का हाल है। गांव का भी यही हाल है। दादा–परदादाओं के सामने जो हमारी जमीन थी वो तो बंध गई। प्रकृति और इतिहास ने जो भी जमीन दी है वो ज्यों की त्यों है। लेकिन हमारी जनसंख्या बढ़ती जाती है। तेज रफ्तार से ना सही, मन्द रफ्तार से बढ़ेगी, तब बढ़ती जाएगी। 1857 में जब अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की पहली लड़ाई लड़ी गयी थी, हिन्दुस्तान की कुल आबादी 18 करोड़ थी। आज हिन्दुस्तान, उस वक्त जिस वक्त पाकिस्तान

और बंगलादेश शामिल थे। उनको मिलाकर आबादी होगी आज 85 करोड़ की। आबादी 18 करोड़ से 85 करोड़ और जो क्षेत्रफल था जमीन का जो 1857 में था वो ही है। लिहाजा नतीजा यह है कि किसानों के पास जमीन कम और कम और कमतर होती चली जाती है।

1970–71 में हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट ने एक सेन्सस, एक सर्वे किया था कि कितनी जमीन–कितने किसानों के पास है, कौन–सी फसल उसमें बोते हैं, कितनी सिंचित है और सिंचित जो है उसके सिंचाई के जरीये क्या है, जैसे ट्यूबवेल है या पुराना कुआं है या नहर है। उस रिपोर्ट के अनुसार, उस सेन्सस के अनुसार 33 फीसदी किसान हमारे यहां ऐसा है, जिसके पास 2 बीघे से कम जमीन है। 2 बीघे नहीं है, 2 बीघे तक है, यानि 2 बीघे से कम 18 फीसदी किसान ऐसे हैं, जिनके पास 2 बीघे से 4 बीघे तक जमीन है। 51 फीसदी हुए, आधे से ज्यादा वो लोग जो किसान कहलाते हैं, वो नाममात्र के किसान हैं। वो उस जमीन में गुजर नहीं कर सकते, चाहे दिन और रात बेचारे मेहनत क्यों ना करें। और 19 फीसदी आदमी हमारे ऐसे हैं, इन काश्तकारों में, इन किसानों में, जिनके पास 4 बीघे से 8 बीघे तक जमीन है।

ये हमारे गांव का हाल है। ये लोग भी बेरोजगार बैठै हैं और गांवों के अन्दर हमारी जो कुल आबादी है, उसके 26 फीसदी खेतिहर मजदूर हैं। अंग्रेजों के जमाने में 17 फीसदी खेतिहर मजदूर थे। स्वराज के 20 साल बाद, 25 साल बाद खेतिहर मजदूरों की तादाद या उनका प्रतिशत 17 से बढ़कर हो गया 26। तो, ये बेरोजगारी का अंदाजा लगाइए आप। 22 करोड़ आदमी आज हमारे यहां काम करने के लायक हैं जिनकी उमर 16 बरस से 59–60 बरस की थी। आबादी हमारी 65 करोड़, लेकिन काम करने वाले हमारे हाथ 22 करोड़ हैं। एक तिहाई से कुछ जरा सी ज्यादा आबादी है।

तो उनमें से कुल 3 फीसदी बड़े कारखानों में लगे हुए हैं। अब आपके सब लोग करीब–करीब पूरी तरह बेरोजगार हैं या अर्ध–बेरोजगार हैं, अन–एम्प्लॉयड हैं या अन्डर–एम्प्लॉयड हैं। ये बेरोजगारी जो बढ़ती चली जा रही है। अब असमानता, आमदनी में गैर–बराबरी, फर्क जो नहीं होना चाहिए, इतना ज्यादा हो गया है। ये मेरी पीढ़ी के लोग, अंग्रेजों के जमाने में तकरीर करते थे गांधी जी के नेतृत्व में। जब हम लोग कांग्रेस में काम करते थे तो हमारे लिए एक दलील ये हुआ करती थी कि बड़े–बड़े सेठ आज अंग्रेजों ने पैदा कर दिए हैं पहले सेठ नहीं थे हमारे देश में। इन सेठों में और गरीबों में, बड़े–बड़े शहर के रहने वालों में और किसानों में जो आमदनी का फर्क है, जब स्वराज मिलेगा तब इसको कम करेंगे।

लेकिन दोस्तों, आपको जानकर अफसोस होगा के जो फर्क पहले था 50–51 में, 77–78 में वो फर्क दुगना हो गया, बजाए कम होने के। अगर 50–51 में सरकारी आंकड़ों के अनुसार एक गांव वाले की या किसान की आमदनी 100 रू0 थी तो गैर किसान की, जो अधिकतर शहर में रहते हैं उनकी आमदनी 178 रूपये थी। मोटे तौर पर मैं कह सकता हूं एक और पौने दो का फर्क था। सन् 76–77 में गांववाले की आमदनी अगर 100 रू0 थी, तो शहरवाले की या दूसरा पेशा करने वाले की आमदनी 346 रू0। अर्थात् मोटा–सा फर्क एक और 3.5 का है। पहले फर्क एक और पौने दो का, आज फर्क है एक और साढ़े तीन का। दुनिया में बराबर सबकी आमदनी हो जाए, नामुमकिन है। कभी नहीं होगी, फर्क रहेगा। लेकिन जिस दौर में, अहद में वो फर्क जितना कम हो जाए, वो गवर्नमेंट उतनी ही अच्छी होगी और

जिस गवर्नमेंट के अहद में, जमाने में वो फर्क बढ़ जाए, वो गवर्नमेंट उतनी ही निकम्मी मानी जाएगी। इसके अलावा दोस्तों, अंग्रेज के जमाने में, जैसा मैंने कहा धीरे–धीरे बड़े–बड़े उद्योगपति और कारखानेदार पैदा होते जा रहे थे, तो अब बहुत ज्यादा बड़ी तादाद में बड़े–बड़े उद्योगपति कैपिटलिस्ट पूंजीपति पैदा हो गए हैं। उनकी जायदादें बढ़ रही हैं। दो के नाम आपने, लगभग सभी ने सुने होंगे टाटा और बिरला। टाटा के पास सन् 51 में 116 करोड़ की सम्पत्ति थी। सन् 78 में वो 1100 करोड़ से ज्यादा की हो गई। इससे भी ज्यादा तरक्की की बिरला साहब ने। बिरला की कुल 53 करोड़ की सम्पत्ति थी, अब 19 गुना बढ़कर उनकी भी 1100 करोड़ से ज्यादा की हो गई। ऐसी बड़ी–बड़ी मिसाल है और फलां है, फलां है, फलां है, बहुत हैं जो बड़े–बड़े सेठ बनते जाते हैं। उधर 48 फीसदी आदमी गरीबी की रेखा के नीचे रहता है। तो यह हैं तीन बड़ी समस्याएं – गरीबी, बेरोजगारी और गरीब–अमीर की आमदनी का फर्क और ज्यादा बढ़ते जाना, खाई चौड़े होते जाना।

इसके अलावा चौथी सबसे बड़ी समस्या है, बेईमानी की। जिस देश में महाजन लोग, महाजन माने बड़े आदमी। पुराना संस्कृत का एक श्लोक है कि जिस रास्ते महाजन चलते हैं सब साधारण जन उसी रास्ते चलते हैं। जिनके हाथ में अगर सत्ता है जो गांव के सभापति हैं, म्युनिसिपैल्टी के चेयरमैन हैं या एम0एल0ए0 हैं या एम0पी0 हैं या मिनिस्टर हैं या चीफ मिनिस्टर हैं या प्राईम–मिनिस्टर हैं अगर वो ईमानदार नहीं होंगे, तो वो देश कभी तरक्की करने वाला नहीं हो सकेगा दोस्तों, (तालियां) उनका असर सारे लोगों पर पड़ेगा, सारे बच्चों पर पडेगा, सारे विद्यार्थियों पर, नौजवानों पर पड़ेगा, सारे राज–कर्मचारियों पर पड़ेगा। आजकल की जो नई पीढ़ी है, जो स्कूलों और कालेजों में पढ़ती है, मुझे उनके साथ एक मायने में बड़ी हमदर्दी तो यह है कि जब मैं और मेरी पीढ़ी के लोग स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे, तो हमारे सामने बड़े–बड़े लोगों के आदर्श थे। लोकमान्य तिलक, गोपाल किशन गोखले, महात्मा गांधी, पं0 मालवीया, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह वगैरह–वगैरह और सन्यासियों में स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ, मेरी उमर के लड़के जो स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे उिनके जीवन वृत को हम पढ़ते, उनके लेख जो थे किताबों में, उनको हम पढ़ते। और हमारे सामने आदर्श जो थे वो ऐसे थे, दुनिया के महापुरुषों में जिनकी शुमार थी। तो उसका असर पड़ता हर काम पर। आज कहां हैं आदर्श हमारे लोगों के सामने। जो बच्चे हैं, आज जो स्कूल और कॉलेज में पढ़ रहे हैं वो किसको अपना आइडियल, आदर्श मान कर चलेंगे। दिल्ली में चुनाव में जो नेता हैं, नेताओं के नाम गिनाना नहीं चाहता हूं लेकिन जो पार्टी मैंने बतलाई है एक–एक नेता पर नजर डालकर देखो, नौजवानों किसकी नकल करना चाहोगे। नहीं भाई नहीं, आदर्श। जिस देश के सामने आदर्श न हो और जिस कौम के लड़कों के सामने सपने, अरमान ना हों, देश को बड़ा बनाने के लिए वो देश तरक्की नहीं कर सकता। (तालियां)

ये हैं चार बड़ी समस्याएं। तो लोकदल और कांग्रेस के जो हमारा प्रोग्राम हैं वो कोई नये नहीं हैं, ठीक वो ही हैं जो महात्मा जी ने बतलाये थे। महात्मा यह कहता था कि दूसरे देशों की नकल मत करो। जहां पर जमीन ज्यादा है, लोहा ज्यादा है, कोयला ज्यादा है, तेल ज्यादा है, जनसंख्या कम है, वहां बड़े कारखानें होंगे, बड़े–बड़े फार्म होंगे। अपने देश में जनसंख्या बहुत है। उनके देश से जमीन कम। उनको देखते हुए, उनकी संख्या को देखते हुए, लोहा, कोयला, तेल और, और दूसरे खनिज पदार्थ कम। इसलिए बड़े कारखाने जरूर

होंगे पर थोड़े से। उनको ही लगाना होगा जो अनिवार्य हों, जिनके बिना देश का काम ना चलता हो। बाकी जो चीजें छोटे पैमाने पर की जा सकती हों जो चीज छोटे पैमाने पर बनाई जा सकती हों, उसको दस्तकारी के जरिये, हाथ के जरिये, हस्तकला के जरिये बनाइए, छोटी मशीन के जरिये बनाइए। बड़े कारखाने लगेंगे तो बड़े–बड़े पूंजीपति भी बढ़ जाएंगे और लड़के बेरोजगार हो जाएंगे।

तो यही दो बात मुझे कहनी हैं आपसे। महात्मा कहता था कि रियल इंडिया लिब्ज इन दि विलेजिज, नोट इन बाम्बे और देहली। असली भारत गांव में रहता है, खेती करता है। खेत की पैदावार बढ़ेगी, तो गांववाले सुखी होंगे और जब खेत की पैदावार बढ़ेगी, तो दुकानदारों के पास पैसा आएगा, तो उस पैसे से कुछ सामान खरीदेंगे–जूता, कपड़ा, साबुन, साइकिल, घड़ी आदि सीमेंट और लोहा चीजों को बनाने के लिए छोटे–बड़े कारखाने लग जाएंगे, परिवहन बढ़ जाएगा और किसानों के लड़के खेती छोड़–छोड़ कर दूसरे पेशों में जाएंगे। जैसे ही किसानों की तादाद घटेगी और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़ेगी, देश मालदार होने लगेगा।

लिहाजा महात्मा कहता था कि खेत की पैदावार बढ़ाओ लेकिन किसी ने परवाह नहीं की। मैं आपको बता देना चाहता हूं दोस्तों। जहां मैं खेत की पैदावार बढ़ाने की बात कह रहा हूं, वहीं मैं ये इशारा कर चुका हूं कि जिस मुल्क में किसानों की तादाद बहुत ज्यादा होगी, वो मुल्क गरीब होगा। जिस देश में किसानों के अलावा दूसरे लोगों की तादाद ज्यादा होगी, वो देश मालदार होगा। जब अंग्रेज आए थे अपने मुल्क में 60 आदमी खेती करते थे 100 के पीछे। 25 आदमी दस्तकारियों में लगे हुए थे, छोटे–छोटे कस्बों में और हर गांव में। बड़े कारखाने उस वक्त नहीं थे। आज 60 की बजाए 72 हो गए, खेती और दस्तकारी या उद्योगधन्धों में 25 से घटकर 9 या 10 रह गये। लिहाजा, आंख मीच कर कह सकते हो, बिना ज्यादा मुताल्ला किये या अध्ययन किए कि आज ये मुल्क गरीब है बमुकाबले 200 बरस के, जबकि अंग्रेज हमारे मुल्क में आया था। चाहे लाखों लोगों पर कार हो गई हों, चाहें बड़े–बड़े गगनचुम्बी मकान बन गये हों और चाहे कितने टेलीविजन सेट्स हों और हमारे पास रेडियो हों, फ्रिज हों। लेकिन कुल मिलाकर औसत हिन्दुस्तानी आज गरीब है, बमुकाबले 200 बरस पहले के। क्योंकि किसानों की तादाद बजाए घटने के बढ़ी और गैर किसानी पेशा करने वालों लोगों की तादाद 25 से 10 हो गई।

तो गांधी जी ये कहते थे दूसरा काम ये करना है कि छोटे रोजगार लगाओ। वो एक राजा के दीवान के बेटे थे, मालदार घर में पैदा हुए थे, वैरिस्ट्री पास करके आए थे, चरखा लेकर क्यों बैठे? उनका पेशा तो नहीं था जुलाहे का या बनुकर का। केवल हमको ये सिखाने के लिए कि जब कपड़ा बन सकता है हाथ से, चरखे से और करघों से, तो बड़े कारखानों की जरूरत नहीं। और सबसे बड़ा उद्योग कपड़े का ही है। रोटी के बाद कपड़े की जरूरत है। तो सबसे ज्यादा आदमी आज हमारे यहां कारखानों में या इस उद्योग में लगे हुए हैं, कपड़े के उद्योग में। आज जितने भी मैंने बतलाए शायद अभी भी 58 लाख आदमी लगे हुए हैं बड़े कारखानों में। इनमें 10 लाख आदमी तो कपड़े के ही कारखानों में लगे हुए हैं। 1953 की गवर्नमेंट आफ इंडिया की एक कमेटी की एक टैक्सटाइल कमेटी का भी तर्क ये है कि कारखाने का मजदूर जितना कपड़ा बनाता है, उस कपड़े को बनाने के लिए 12 बुनकर चाहिए करघा चलाने को। 12 करघों पर को कपड़ा पैदा होगा। अगर आज हम ये हुक्म दे दें

जैसा कि मेरा इरादा है अगर आप लोगों ने हमको मैजोरिटी दी और मेरे साथी राजी हुए तो मेरा इरादा ये है कि कपड़े के कारखानेदारों को ये हुक्म दिया जाए कि तुम हिन्दुस्तान में अपना कपड़ा नहीं बेचोगे, यहां करघों में बना हुआ कपड़ा बिकेगा और तुम हिन्दुस्तान के बाहर ही कपड़ा बेच सकते हो हिन्दुस्तान के अन्दर नहीं। (तालियां)

मैं जानता हूं तुम बाहर की मन्डियों में मुकाबला नहीं कर सकते। दूसरे देशों के बने हुए कपड़े का। तो तुम्हारे कारखाने चाहे बन्द होजाएं लेकिन हिन्दुस्तान में तुम्हारा कपड़ा नहीं बिक पाएगा। तो इसका क्या नतीजा होगा? बिना किसी पूंजी के बिना किसी तकनीकी ज्ञान के बिन पावर के, बिजली वगैरह के अपने आप करोड़ों लोगों को रोजगार मिल जाएगा। दस की जरब दो 12 में, 10 लाख मजदूर लगे हुए हैं। एक करोड़ 20 लाख मजदूर जो हमारे गांवों में, शहरों में, कस्बों में मारे–मारे फिरते हैं, उनको काम मिल जाए। इस तरह आज दियासलाई बन रही है मशीन से–विमको की, मैं जब वित्त मंत्री था तो मैंने विमको का टैक्स दूना कर दिया और हाथ से जो दियासलाई बनती थी, उसका आधा कर दिया और, और कम कर दिया। आपको सुनकर ताज्जुब होगा देहात के रहने वाले बड़े–बड़े लीडरों ने मेरे पास सिफारिश भेजी कि विमको जो कारखाना है, परदेशियों का, इसका टैक्स नहीं बढ़ाइए आप। टैक्स उन पर यों बढ़ाया था, ताकि हाथ से बनाने वाले लोग मुकाबला कर सकें मशीन से बनाने वालों से, ताकि उनको रोजगार मिले। और लीडरान ने कम्युनिस्ट पार्टी के लीडरान ने, मैं नाम नहीं लेना चाहता, एक जनता पार्टी का चीफ मिनिस्टर था इस सूबे में, अब नहीं है, उसकी चिट्ठी आई और बम्बई में एक जनता पार्टी का एम0पी0 है, वकील है बड़ा भारी है, उसने भी मुझसे कहा विमको की सिफारिश की, मैंने कहा हरगिज–हरगिज नहीं।

जो चीज हाथ से बन सकती है, दियासलाई हाथ से बन सकती है, तो मशीन वाले के, जिस तरह के वैल फयेर में जो अच्छा चलता है, जो उस पर जूता रख देता है सारे (नार) रख देता है किसान और दूसरे को खाली कर देता है। तो मैं सारा नार इस कंघे पर रखूंगा, मशीनगार को लेकिन गरीब आदमी से जो कि मैं हर किसी को हाथ से बनाता है। हरगिज–हरगिज नहीं। (तालियां) ऐसे ही इंदिरा जी ने, मैं चन्द बातें सुना रहा हूं कहानी तो ये लम्बी है। जब वो जा रही थीं उस साल सन् 76 में उन्होंने तीन कारखानेदारों को कालीन बनाने के लिए लाइसेंस दे दिए मशीन से कालीन बनाएं। जबकि हुगली के अन्दर और बिहार के अन्दर कालीन हाथ से बनता है, बढ़िया से बढ़िया और दूसरे देशों में जाता था। तो जब मैं वित्त मंत्री हुआ – अपने बजट में मैंने 30 फीसदी टैक्स लगा दिया था कारखानेदार पर जिन्होंने बनाना शुरू कर दिया था कालीन और जो हाथ से कालीन बना रहे थे, मैंने उनका टैक्स माफ कर दिया था, ताकि वह गरीब मुकाबला कर सके, कारखाने से बने माल का। (तालियां)

तो बेशक हवाई जहाज बनाने के लिए, फौज के लिए, टैंक और तोप (और वो) बारूद बनाने के लिए, बड़े कारखाने चाहिएं। बिजली बनाने के लिए, लोहा बनाने के लिए और देश भर में मीटर बनाने के लिए, जो उनको जरूरत होगी तो बेशक बड़े कारखाने लगाए। लेकिन जो भी चीज छोटे पैमाने पर तैयार हो सकती है, उसके लिए हम कारखाने नहीं लगने देंगे आगे को। हमारे कांग्रेस के दोस्तों ने तो रोटी बनाने के भी कारखानें लगा दिए हैं, आपको सुनकर ताज्जुब होगा। आदमियों को तीन ही चीजों की जरूरत है– रोटी, कपड़ा और मकान। पर गवर्नमेंट की बेकरी भी लग गई बम्बई में, कानपुर में तो मुझे मालूम है। पहले छोटे–छोटे

दुकानदार अपना आटा खरीदा और आप के लिए केक–वेक, नमक जाने क्या–क्या लगा दिया, देश को तो डबलरोटी बना दिया आपने। आपने आटा दिया आप ही बना लीजिए लाखों छोटे–छोटे पैमाने पर, लोगों को आजादी के साथ रोजगार करने का मौका मिलता था। लेकिन गवर्नमेंट ने कारखाने लगा दिए। रोटी बनाने के कारखाने और वो लाखों आदमी बेरोजगार हो गए हैं, उनका कौन जिम्मेदार है? दोस्तों और सुनकर आपको तकलीफ होगी, ब्रिटेनिया बिस्कुट, अंग्रेजों का एक कारखाना है, बिस्कुट बनाने में लगा हुआ। क्यों? हमारे लोग बिस्कुट नहीं बना सकते। पूछो इन लोगों से, इंदिरा जी के साथियों से पूछो, इनके अनुयाइयों से पूछो। यही नहीं, मकान बनाने का भी कारखाना लग गया है, आपको पता नहीं। सुलतानपुर एक गांव है देहली के पास प्रीफैब्रीकेटिंग हाउसिंग फैक्ट्री, बना बनाया मकान बनाने का कारखाना। मैंने अभी हुकुम दिया है कि यह कारखाना बन्द हो जाएगा, क्यों? क्या हमारे कारीगर नहीं हैं। मकान बनाने के लिए, राज नहीं हैं क्या ? ईंट काटने वाले क्या हमारे यहां लोग नहीं हैं। क्या ईंटों को ढोने वाले हमारे यहां मजदूर नहीं हैं, अपने बैलों की गाड़ियों को लेकर ढो सकते थे इनको, क्या हमारे बढ़ई नहीं हैं, लुहार नहीं हैं जो इन मकानों को बना सकें, फिर क्यों बनाया ? क्यों बनाया तो ये ख्याल हो गया है, खब्त हो गया है कि मशीन से काम किया जाए। तो फिर मशीन कैसे चलेगी। हाथ से काम लिया जाए, मशीनें बन्द कर दी जाएं।

महात्मा ये कहता था कि ये बात अमेरिका और आस्ट्रेलिया में ठीक हो सकती है लेकिन जहां हाथ खाली पड़े हैं, वहां मशीन से काम करो, ताकि और हाथ खाली हो जाएं, इससे बड़ा, और खराब काम कोई गौरमेंट अपनी जनता के लिए कर नहीं सकती है। (तालियां) हमारे पुरखों ने, हमारे कारीगरों ने 300 बरस पहले ताजमहल जैसा मकान दुनिया में बना दिया लेकिन हमारे कांग्रेस राज में रहने के लिए कोठियां जो हैं, वो मशीन से बनाई गई हैं। विचार करो। लोग बेरोजगार होते जी रहे हैं। एक तरफ बेरोजगारी बढ़ाते जा रहे हैं, दूसरी तरफ बेरोजगारी को रो रहे हैं। आज चारों तरफ हिंसा का जो वातावतरण है और जो कानून तोड़ने की हवा पैदा हो गई है देश में, वो बारतर इन बेरोजगार लड़कों की वजह से हो रही है, जो मारे–मारे फिरते हैं, बड़े कारखानों की वजह से। इम्प्रूवमेंट्स हों, चरण सिंह, हमसे कहते हैं, लोग लिखते हैं अखबार वाले कि चरण सिंह पुराने जमाने का आदमी है, ये जाहिल है, ये मुल्क को पीछे ले जाना चाहता है। नहीं– मैं पीछे नहीं ले जाना चाहता, मैं लड़कों की बेरोजगारी को मिटाना चाहता हूं। मैं केवल वो ही बात कह रहा हूं जो महात्मा गांधी ने कहीं और महात्मा गांधी ने जो कहा था वो धीरे–धीरे दुनिया उसको मान रही है और सन् 2000 में नहीं, 2050 में भी गांधी जी को लोग याद करेंगे, उनकी नीतियों पर अमल करेंगे। (तालियां)

इम्प्रूव्ड टैक्नोलोजी सौफिस्टिकेटिड टैक्नोलोजी ओटोनेशन वगैरह–वगैरह, स्वचालित मशीनें अगर चलें तो ठीक है, एक हजार आदमी काम कर रहे हैं, बहुत बड़ी टैक्नोलोजी या तकनीकी ज्ञान से उसी काम को 10 आदमी कर देंगे लेकिन 990 बेकार हो जायेंगे। ये हमारा हाल है। मैं छोटे से किसान के घर पैदा हुआ हूं, किसान के, जिसके घर में छप्पर था, कच्ची दीवारें थी। 5 साल का था, तो मुझे मालूम है, मैं जानता था कि गरीबी के क्या मायने होते हैं। मैंने वो, मेरे जो संस्कार हैं उसमें वही गरीबी की बात है। तो, मैं गांव की बात कर रहा हूं इसलिए कि गांव में पैदा हुआ हूं, गरीबी की बात, उनकी तकलीफों को जनता हूं, इसलिए

कहता हूं। हमारे लीडर, बहुत बड़े–बड़े मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता, बहुत नेक, बहुत काबिल, बहुत कुरबानी करने वाले। दोस्तों ये बड़ी सेवा है, हमारे लीडरों ने बड़ी सेवा की है। ये अब देश को उठाना चाहते थे। लेकिन देश गांव में रहता था, वो महलों के अन्दर पैदा हुए थे, गांव के लोगों की तकलीफों को जानते नहीं थे। इसलिए महात्मा की नीति छोड़कर दूसरी नीति बदली गई और लोकतंत्र आ गया। (तालियां) मैं फिर गांधी जी की नीतियों का पुनरूद्धार करना चाहता हूं और मेरी पार्टी मेरे साथ है।

दोस्तों, यही अब एक ही बात। बेईमानी वगैरह की उसमें क्या है। गांधी जी ने उस वक्त थोड़ा ही कहा था कि रिश्वत बढ़ोत्तरी थी, उसका अपना उदाहरण सबके सामने मौजूद था, उसकी बात का, उसके चरित्र का, उसके मूल्यों का, नैतिक स्तर का।

पढ़े–लिखे लोग यहां बैठे होंगे, जब सन् 44 में दूसरा विश्व युद्ध हुआ। इटली हार गया सबसे पहले। ब्रिटिश फौजों ने कब्जा किया, हिन्दुस्तान की फौज भी वहां गई। लड़ाई खत्म होने के बाद बहुत से हिन्दुस्तानी उस फौज के मेम्बर थे, जो वापिस आए। मेरे जिले के बहुत से लोग फौज में दाखिल हुए, मेरे खानदान के लोग भी फौज में थे। तो, उनमें से कुछ ने मुझे बतलाया कि चौधरी साहब जब हम इटली में गए, इटली में कब्जा रहा अंग्रेजों का और हमारा देश अब तक जब तक के वो लड़ाई पूरी तरह खत्म न हो गई, गुलाम रहा। तो जिस घर में भी हम गए अन्दर, चाहे शहर के अन्दर चाहे गांव के अन्दर, हमने महात्मा गांधी की फोटो को लगा हुआ पाया। (तालियां)

गरीब देश का लीडर, आजाद देश के घरों में उसकी तस्वीर लगी हुई थी। दुनिया ये समझती थी कि जिस मुल्क ने गरीबी के जमाने में ऐसा नेता पैदा किया है, वो आजाद होने के बाद देश को, दुनिया को, फिर दूसरा कोई संदेश देगा, जैसे कि हमारे पुरखों ने अतीत काल में दिए थे। देखो सब अपना–अपना है। तो मैं इस बिना पर, आपसे कहता हूं, अपने प्रोग्राम के बेसिस पर कहता हूं कि देश का भला इसमें होगा कि आप, लोकदल और कांग्रेस गठबन्धन के जो कैंडीडेट हों, उनको वोट दो। एक बात और कहकर अपनी बात खत्म करना चाहता हूं। मैं सूरज छिपने से पहले इंदौर जाना चाहता हूं, क्योंकि हेलीकॉप्टर उसके बाद उतरेगा नहीं।

महात्मा ये कहता था हमारी सारी संस्कृति का ही ये उपदेश है कि आदमी के जीवन के दो हिस्से नहीं होते कि एक पब्लिक, एक प्राइवेट। नहीं। उसमें कम्पार्टमेंट नहीं होते। आदमी का जीवन एक ही है। जो प्राइवेट जीवन है, वो ही पब्लिक जीवन है। अगर कोई व्यक्ति अपनी साथिन के साथ, अपनी धर्मपत्नी के प्रति वफादार नहीं है, अगर वो पब्लिक का लीडर हो गया तो, सौन्दर्य में फंसकर देश को बर्बाद कर सकता है, दोस्तों। (तालियां) अगर कोई आदमी अपने प्राइवेट जीवन में ईमानदार नहीं है, हाथ का सच्चा नहीं है तो बड़ा होकर भी उससे उम्मीद नहीं की जा सकती कि वो ईमानदार होगा और पब्लिक को नहीं लूटेगा।

पार्टी टूटी, इसलिए, जनता पार्टी मैं ही बनाना चाहता था, मैंने ही सबसे ज्यादा कोशिश की, कोई तैयार नहीं था। ये तो जब जेलखाने में डाल दिए इंदिरा ने, तब जाकर तैयार हुए हैं जनसंघ के लोग, सोशलिस्ट पार्टी के लोग और कांग्रेस संगठन वाले लोग। उसके बाद हमने लीडर बना दिया मोरारजी भाई को, क्योंकि वो मन–मानुस में मुझसे बड़े थे। चुनाव में ये तय हुआ कि दक्षिण प्रदेश से ये श्रीमान् मोरारजी देसाई का जो सम्पर्क है, वो बड़े लोगों तक है, गरीबों से कोई उनका वास्ता नहीं है। नतीजा ये हुआ कि दक्षिण में गुजरात से 15 सीट लाये,

20 या 29 लाये 48 में से महाराष्ट्र में, केरल की एक सीट मिली है उनके कहने से। तमिल में एक, कर्नाटक में एक, आन्ध्र प्रदेश में एक और जो इलाका मेरे सुपुर्द था, वहां कलकत्ते तक कांग्रेस का सफाया हो गया था, दोस्तों। उसका सफाया हो गया था। (तालियां) फिर इलैक्शन पूरी तरह हुआ भी नहीं था। 20–22 को आखिरी पोलिंग डेट थी और मेरा इलेक्शन था, मैं जाना चाहता था पोलिंग पर, लेकिन मैं काम करते–करते थक गया था, बीमार हो गया था, मुझे अस्पताल में जाना पड़ा। तो 23 मार्च को मेरे पास अटल बिहारी वाजपेयी आते हैं और कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी के लीडर आते हैं एम0जी0 गोरे कि चौधरी साहब हम चाहते हैं कि जगजीवन राम को प्राईम–मिनिस्टर बनाया जाए, मैंने कहा कयों? मैं और तो कोई बात नहीं कहना चाहता हूं। उनके जो प्राइवेट जीवन की बात है मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूं। लेकिन मैं ये पूछना चाहता हूं कि क्या उन्होंने इमरजेंसी लागू किये जाने का प्रस्ताव नहीं किया था, वो हमारी इंदिरा को खुश करने के लिए, उसका ईनाम देने जा रहे हो क्या आप। (तालियां)

वो तब आए, जब देखा कि उनसे इंदिरा नाराज है, उनका विश्वास नहीं करती है। जब हमारी 30 जनवरी को बड़ी–बड़ी मीटिंग दिल्ली में हो चुकी थी। जब हमने इलेक्शन कैम्पेन का उद्घाटन कर दिया। पहले वो आने को तैयार नहीं थे, डरते थे कि पता नहीं यहां क्या है? जब देखा कि जनता जाग चुकी है, जनता पार्टी के साथ आ रही है, तो श्री बहुगुणा और श्री जगजीवन राम आए। मैंने इन दोनों से कहा– स्वागत, लेकिन जनता से माफी मांगो, जो आप लोगों ने पाप किये हैं। आपने आर्डीनेंस पेश किया, जबकि आप गृहमंत्री नहीं थे, आपके लिए लाजमी नहीं था। बहुगुणा ने 32 हजार आदमी जेल के अन्दर डाले, जबकि हिसाब ये यू0पी0 में केवल 16 हजार आदमी जेल में आने चाहिए थे। एक लाख 2 हजार आदमी जेल में डाले गए। यू0पी0 की आबादी 16 फीसदी है, तो 16 फीसदी सवा 16 हजार आदमी होने चाहिए। लेकिन बड़ा जोश उफनाया। 32 हजार जेल में डाले, तो मैंने कहा कि जनता से यह कहो कि हमसे गलती हुई है, हमसे पाप हुआ है, हम माफी चाहते हैं। और सीधे जनता पार्टी में आयें, अपनी अलग पार्टी न बनाएं।

लेकिन नहीं माने और सिर्फ उन सीटों पर वो जीत कर आए हैं, जिन्हें मैंने छोड़ दिया था, उनके लिए। किसी एक पर और जीत के दिखाओ। दो सीटों पर नहीं माने, अपना कैंडीडेट खड़ा कर दिया था, तीन लड़े– एक हमारा जनता दल, एक कांग्रेस का, एक सी0एफ0डी0, इन्होंने नाम रखा दोनों–दोनों का। और अगर ये हमारे टिकिट पे ना खड़े होते, तो दोनों की जमानत जब्त होती, बहुगुणा की भी और जगजीवन राम की भी। मैंने कहा कि मैं ऐसे आदमी को मानने के लिए तैयार नहीं हूं प्राईम–मिनिस्टर। मैं इनके मुकाबले में मोरारजी को पसन्द करूंगा। मेरे से उमर में 7 साल बड़े हैं और 19 महीने जेलखाना काटा है, अगरचे इसे मैं जानता हूं कि गरीबों के प्रति उनमें वह मुहब्बत, वो निगाह नहीं है, जो बड़े– मालदार लोगों के प्रति है, तो मेरे उनके विचार मिलेंगे नहीं लेकिन जब दो में से मुझको चूज करना है, तो मेरी राय में जो लैसर–इविल है, उसको पसन्द करूंगा। मैंने चिट्ठी लिखी जयप्रकाश नारायण जी को कि मैं चाहता हूं मोरारजी को। मेरे और जगजीवन के साथ वोट पड़ेंगे, इसलिए वहां पर चुनेंगे कि प्राइम–मिनिस्टर कौन है? प्राइम–मिनिस्टर होते ही दिमाग खराब। हां, ठीक। मालिक हो गए। केबिनेट बनाई, बिना हमसे मशविरा लिए हुए, तीसरे नम्बर की जो पार्टी थी, जनसंघ के भी बराबर नहीं आती थी। मैं ईमानदारी से इस पार्टी को गांधी जी के उसूलों पर चलने वाली बनाना चाहता हूं। अगर मेरे मन में ये पाप होता कि जनसंघ के लोगों

को टिकट न दो। नहीं। जो कुछ आकरे–ठाकरे या कौन साहब हैं, उन्होंने जिसको कहा, आंख मीचकर टिकट दे दिया। आज वो समझते हैं हम मालिक हैं। मध्य प्रदेश में बड़ा भारी हमारा असर है और असर को साबित करना चाहते हैं, दूसरे लोगों की सभाओं में विघ्न डालकर।

खैर, जो कुछ भी हो, हमारे जनसंघ के 80–80 मेम्बर थे और मोरारजी भाई की पार्टी के केवल 52 थे लेकिन हमको 3–3, 4–4 सीट दिए अपनी 6 और प्राइम मिनिस्टरशिप जगजीवन राम ने ये बयान दिया कि चरण सिंह हरिजनों का विद्रोही है। विद्रोही है, दुश्मन है, क्यों, क्योंकि मैं बाधक हो गया हूं उनके प्राइम मिनिस्टर बनने में। बात बहुत सी हैं, छोड़े देता हूं। सन् 77, 23 दिसम्बर को मेरे जनमदिन के दिन राजनारायण ने, मेरे दोस्तों ने तय किया कि हम किसानों को बुलाएंगे, गांव–वालों को बुलाएंगे। गांववाले वहां मुझको जानते हैं 23 साल से, 24 साल से, मेरा इलाका वो ही रहा काम करने का बल्कि सन् 37 से लेकर अब तक एम0एल0ए0 रहा हूं बराबर अपने इलाके से और मेरी नीति जो जमींदारी खत्म करने की बाबत थी और जो मेरे विचार थे, उनको पूरी तरह वह जानते थे। मैंने कहा था दिल्ली वाले लोग नाराज हो जायंगे, ना मनाओ। दिल्ली वाले समझेंगे कि चरण सिंह केवल गांव की बात करता है, केवल किसानों का नुमाइंदा है। अगरचे मेरा विश्वास था और है और आपको शायद थोड़ा–सा समझा चुका हूं कि किसानों की जब तक खेती की पैदावार नहीं बढ़ेगी, तब तक ना तिजारत बढ़ेगी ना और धन्धे बढ़ेंगे ना ट्रांसपोर्ट बढ़ेगा ना देश की तरक्की होगी। गैर मुनासिब पेशा, खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वालों के हितों में और किसानों के हितों में विरोध नहीं है बल्कि शहरवालों की ओर खेती ना करने वाले दूसरे पेशे के लोगों की खुशहाली छिपी हुई है, किसानों की खुशहाली में दोस्तो। जब ये खुशहाल होंगे, तभी शहर के लोग खुशहाल होंगे।

लेकिन मैंने कहा कि दिल्ली के लोग ये बात जानते नहीं, यू0पी0 के हर शहर के आदमी को समझा चुका हूं, खूब। तो ना करो, नहीं माने। 20–25 लाख आदमी आ गए। बस, मोरारजी के दिल पर सांप लोट गया, ईर्ष्या का दोस्तों। ये भी नहीं हुआ, उनके बराबर बैठता था कि मुझे शुभकामना दे देते कि चरण सिंह तुम्हारी उमर लम्बी होगी, पर मैं चाहता हूं परमात्मा से, तुम 25 बरस और जीओ। नो। ऐसा छोटा आदमी है। फिर एक मेरे से गलती और हो गई। 15 जनवरी को भाव नगर, जो कि जिले का हेडक्वाटर है गुजरात में, उसमें जनता पार्टी की तरफ से मीटिंग हुई डिस्ट्रिक्ट की, जनता पार्टी का जो प्रेजिडेंट था वो अध्यक्ष था, उसके सामने इन्होंने बयान दिया, जो 15 या 16 तारीख के हिन्दुस्तान के सब अखबार में छपा, छपा कि मेरे बेटे के खिलाफ बहुत से अखबारों में इल्जाम छपे हैं रिश्वत के। मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि तीन निष्पक्ष आदमियों की कमेटी बन जाए, जॉच कर ले, जो सब झूठे हैं इल्जाम। कौन से बाप बेटे अब क्या ख्याल है। चुप हो गए। दो महीने तक जिक्र नहीं। तो 11 मार्च को मैंने चिट्ठी लिखी कि महाराज आप ये कहकर आए थे कि कमीशन बैठायेंगे, मैं नहीं जानता क्या आरोप हैं। मैंने पढ़े नहीं हैं। हो सकता है सब गलत हों।

लेकिन सार्वजनिक काम करने वाले के लिए, लीडर के लिए, इतना ही काफी नहीं है कि वो ईमानदार हो, बल्कि जनता का विश्वास हो, कि ये ईमानदार हैं। (तालियां)

रामचन्द्र ने जानकी माता को क्यों निकाल दिया, ये मिसाल हमारे सामने मौजूद है। तो मुझको क्या चिट्ठी लिखते हैं कि इल्जाम तो लगते ही रहते हैं, सब सच्चे नहीं होते हैं, झूठे

होते हैं। मेरे पास तो तुम्हारी धरमपत्नी की भी शिकायत आई है। मैंने जवाब लिखा कि ठीक है, आप कांति देसाई के खिलाफ बाद में बिठाना कमीशन, पहले कमीशन मेरे घरवालों पर, मुझ पर बिठा दो, मैं इसके लिए तैयार हूं। (तालियां) कोई जवाब नहीं था। नहीं– नहीं मेरा ये मतलब नहीं हैं।

दोस्तों, मुझे अपनी बात, बात नहीं कहनी चाहिए लेकिन आपको बताये देता हूं क्योंकि जिक्र आ गया है, मेरा जीवन एक खुली किताब है प्राइवेट जीवन भी और पब्लिक जीवन जो चाहे आए, उसे पढ़ ले सूक्ष्म दृष्टि से। (तालियां) बस, नाराज हो गए। मैं बीमार पड़ा हुआ था, अस्तपाल से निकल कर सूरजकुंड पर था लेकिन डा0 जो मेरा ईलाज करता था इंडियन मेडीकल इंस्टीट्यूट आफ साईंसिस में, उस समय मुझको एक डॉक्टर और नर्स 24 घण्टे अटेंड करते थे। (जनसमूह का शोर) तो आप अपने लीडरों से यही सीखकर आये हो, यही सीखा है, तो ये सब नहीं चलने वाला तुम लोगों के जरिये। हरगिज नहीं चला सकते। अगर सभ्य लोग हो, पढ़े–लिखे घरों के लोग हो, चाहते हो पंचायती राज कायम हो तो खामोशी से, जैसे अब तक सुनते रहे हो, सुनो। नहीं सुनना चाहते हो, तो जा सकते हो। लेकिन ये शरीफ आदमियों का काम नहीं है कि मीटिंग में विघ्न डालें, बतलाए देता हूं। (शोर)

मैं आप लोगों से बताना चाहता हूं दोस्तों, इंदिरा तो डिक्टेटर बनना चाहती है लेकिन वह भी एक इंसान है, वो आज नहीं कल, कल नहीं परसों, नहीं रहेंगी, क्योंकि कोई आदमी रहा नहीं है। लेकिन ये जनसंघ एक संगठन है, जो डिक्टेटर चाहता है, बनना चाहता है, ये ज्यादा है। दुश्मन साबित होगा मुल्क के लिए, घातक साबित होगा बल्कि कांग्रेस को मैं बतलाना चाहता हूं। (तालियां) (शोर) इनको लज्जा नहीं आती है इस बात से, ये बच्चे वो हैं, जिनको मैं घण्टों–घण्टों और महीनों पढ़ा सकता हूं और इनको बातें बतला सकता हूं। लेकिन खड़े होकर एकदम संगठित होकर शोर मचाना चाहते हैं, मीटिंग में बिघ्न डालने के लिए और ये बात इनको समझ लेनी चाहिए, ठीक है, तुम घर में शोर मचा सकते हो। मैंने अपने साथियों से कहा नहीं है, अगर 5–7 गांव के लड़कों को ले आते लाठी–वाठी लेकर, तो ये शोर आप यहां भी नहीं कर सकते थे और दूसरे सूबों में तुम्हारी मीटिंग भी नहीं हो सकेगी। मेरे साथी नहीं होने देंगे, मेरे मर्जी के खिलाफ भी (शोर) अगर तुम यहां मीटिंग में इस तरह से विघ्न डालोगे। क्या मतलब हुआ। हर आदमी को अपनी राय रखने का हक है। अगर आप सुनना चाहते हैं, तो फिर खामोशी से सुनिए।

तो मैं आपसे कह ये रहा था कि मैं जब बीमार था, तो मुझसे इस्तीफा मांगा एक बिल्कुल गलत आरोप पर, उसकी तफसील में नहीं जाना चाहता। एक तरफ तो मैंने अपनी बीमारी में इस शख्स को प्राइम–मिनिस्टर बनाया, दूसरी तरफ इतना उदार चेता प्राईम–मिनिस्टर मैंने बना दिया, मुझसे गलती हो गई। क्योंकि उसने मेरी बीमारी में मुझसे इस्तीफा मांगा। फिर हमारे तीनों साथियों को निकाला, तीन चीफ मिनिस्टर थे एक कर्पूरी ठाकुर, वो नाई के घर पैदा हुआ। उससे बड़ा त्यागी आदमी कम–से–कम वहां बिहार में नहीं है, वो हमारा चीफ मिनिस्टर था। उसका बाप आज भी नाई का काम करता है गांव में, इससे अंदाजा लगा सकते हो, उसके चरित्र का। (तालियां) लेकिन क्योंकि बी0एल0डी0 का था, उसको हटाया गया। जनसंघ के लोगों का और मोरारजी का ये फैसला हुआ कि चरण सिंह खतरनाक आदमी है, यह प्रभावशाली आदमी है, इसको निकालो। रामनरेश यादव एक गरीब

घर में पैदा हुआ, यू0पी0 का हमारा चीफ मिनिस्टर था, उसको निकाला। देवी लाल को निकाला, राजनारायण को निकाला। राज नारायण बेशक संयम से बाहर कभी–कभी भाषण देते थे। आपने पढ़ा होगा अखबारों में, मैं उनकी इस बात को पसन्द नहीं करता था। लेकिन चलो, आपने निकाला, मैंने उसको कन्डम नहीं किया, आपके निकालने का एक्शन। लेकिन आपने ईमानदारी और उसके पीछे मेरिट से, नहीं निकाला, क्योंकि अगर आपने राजनारायण जी को निकाला, तो 3 महीने पहले 100 आदमी जनसंघ के लखनऊ की एसेम्बली में अपने चीफ मिनिस्टर के खिलाफ खुली वोट दे सकते थे, उनके खिलाफ आपने कोई कार्यवाही नहीं की? मेरे साथी 21 जून को इकट्ठे हुए और कहा, चौधरी साहब, क्या चलेगा इस देश में। मैंने कहा जिस पार्टी को बनाने में मेरा और तुम्हारा सबसे बड़ा हाथ है, उसको तोड़ने में मुझको तकलीफ होगी। मेरे पास तो कोई समाधान नहीं सूझता है। फिर मेरे सुपुर्द भी कर दिया वो। राजनारायण जी ने 23 जून को पार्टी छोड़ दी। उनको कमेटी से निकाला था। मैंने बहुत समझाया। उन्होंने कहा कि नहीं, आप मुझे इजाजत दे दीजिएगा। दो दफे मैंने मना किया, नहीं माने, तीसरी बार बाग्रह किया तो मैंने कहा कि अच्छा चले जाओ।

26 जून को पत्रकार सम्मेलन में एक पत्रकार सवाल पूछता है उनसे कि राजनारायण जी आपकी पार्टी को छोड़ के चले गए हैं अगर पुराने लोकदल के लोग सब छोड़ के चले गए या और ज्यादा छोड़ के चले गए तब क्या होगा? तब उन्होंने कहा के गौरमेंट और मजबूत हो जाएगी, अगर सब चले जाएंगे। अभी एक साल पहले तो आप ये दल–बदलने वाले हैं, दल बदलने वाले हैं। नहीं। पहली बात तो यह है ऐन्टी डिफैक्शन बिल जो गौरमेंट की तरफ से मंजूर हुआ, जनता पार्टी की तरफ से और जनता की गौरमेंट की तरफ से और जिसका मैं भी मेम्बर था, होम मिनिस्टर होने के नाते। मैं चेयरमैन था उस कमेटी का, उसमें तय किया कि चौथाई से ज्यादा आदमी अगर छोड़ें और दूसरी किसी पार्टी में चले जाएं, ये नहीं कि नई पार्टी बना लें, तो वो डिफैक्शन है। लेकिन अगर चौथाई से ज्यादा छोड़ेंगे तो डिफैक्शन नहीं है। वो इस्पिलिट है, पार्टी की फूट है। 299 में से हमने 97 आदमियों ने छोड़ी थी पार्टी, जो तिहाई नम्बर था जिनका। कैसा दल–बदल है। नहीं। फिर दल बदलने के मायने एक दल से दूसरा दल नहीं। हमारा वो ही प्रोग्राम है, भारतीय लोकदल को हमने पुनः जीवित किया। हमारा नक्शा था एक पार्टी बनाने का। लेकिन जनसंघ के लोग और मोरारजी भाई जैसे छोटी तबीयत के लोग उसके लायक नहीं थे, बनना नहीं चाहते थे। इसलिए हमको मजबूर किया, कोई रास्ता नहीं छोड़ा। उनका ख्याल ये था के भारतीय लोकदल के अगर सारे लोग भी चले जाएं तो उनकी पार्टी मजबूत होगी और पार्टी मजबूत हो गई।

कहां तक बर्दाश्त किया था। जिन लोगों ने पार्टी बनाई, सबसे ज्यादा कुर्बानी दी, सबसे ज्यादा कोशिश की, जिनका सबसे ज्यादा इनफ्लूयेंस था प्रजेंट थिंक में, उनको सबको एक'–एक को चुन कर निकाल दिया। दोस्तों, खैर अब आपको, तो एक हैं हमारे जगजीवन राम जी। उन्होंने क्या कहना शुरू किया कि प्रेजीडेंट ने मुझको यों नहीं बुलाया कि मैं हरिजन हूं, मैं चमार हूं, बहुत जोर के रहे आप। अरे 298 मेरी राय आई थी, 234 आई थी उनकी मोरारजी की, जो आपके लीडर थे। ये हमको बताया इसलिए उन्होंने मुझे वोट दिला दिए। तो यूं नहीं बुलाया कि चमार थे। क्यों महाराज जब मोरारजी ने इस्तीफा दिया था, उसी वक्त आपको कह सकते थे मजबूर था, राष्ट्रपति नियम के कानून के अनुसार और रवायतों के अनुसार कंजंक्शन्स के अनुसार कि इलैक्शन करा दो। इस्तीफा दिया और मोरारजी अगर

कहते कि मैं चाहता हूं कि इलैक्शन हो, जनता की फिर राय जाए तो उनको करना पड़ता। लेकिन, नहीं। हिम्मत कहां थी। जब मैंने इन्हें चुन के खड़ा किया तो हर पार्टी ने इस नेता का स्वागत किया, सिवाये जनता पार्टी के। होंगे साहब आप हरिजन या गरीब घर में पैदा हुए। बेशक गरीब घर में पैदा हुए थे लेकिन आज आप हिन्दुस्तान के सबसे इने–गिने मालदार लोगों में हैं आप। क्या कहते हो, गरीब की बातें करते हो? महल आपके बने हुए हैं। ये हैं, इनसे सीखोगे बच्चों और नाम नहीं लेना चाहता हूं। जो पार्टी बड़ी हिन्दू संस्कृति की बात करती है, उसके बड़े लीडर का क्या हाल है, सबसे बड़े लीडर का। लज्जा की बात है। कहना नहीं चाहता हूं। मुफलिस दोस्तों, कभी–कभी मुझको इतनी तकलीफ होती है आपको यकीन नहीं आएगा, जो मुझको जानते नहीं हो कि मैं कभी–कभी भागने की बात सोचता हूं यहां से। लेकिन, मुझ पे जो जिम्मेदारी है, जो देश का हाल हो चुका है, मैं जानता हूं कि अगर मैंने इस्तीफा दिया, तब भी नुक्ताचीनी होगी। आज ये देश को बचाने की बात नहीं है कि डूबने जा रहा है। ये आलरेडी डूब चुका है। इसको सालवेज करना है। इसको निकालना है। इतना इच्छा हमारा प्यारा मुल्क था, बड़ा मुल्क था, दुनिया का शरोमणी था किसी समय में।

इन शब्दों के साथ मैं आपसे अपील करता हूं आखिरी, कि महात्मा गांधी के प्रोग्राम पर और ईमानदार लोगों को राय दो, अगर हमारे लोकदल और कांग्रेस के काम्बीनेशन से बेईमान आदमी खड़ा हो जाए तो उसको राय हरगिज–हरगिज मत देना दोस्तों। बिल्कुल मत देना, मुझे कोई शिकायत नहीं होगी। (तालियां)

मुझे या मेरे साथियों को, किसी को 10 साल देना, किसी को 20 देना, किसी को 4 साल देना। मुल्क हमेशा रहेगा आपका और कामयाब तभी होगा जब ईमानदार उसके लीडर बनेंगे। इन शब्दों के साथ मैं गरीब लोगों से अपील करूंगा इन किसानों से अपील करूंगा, मजदूरों से अपील करूंगा, बेरोजगार लड़कों से अपील करूंगा कि उठो, जागो और अपनी ताकत को पहचानों। तुम्हारी ही वोट ज्यादा है। तुम्हें जाकर दिल्ली में और भोपाल में लोग भूल जाते हैं, वोटों के वक्त तुमको याद करते है। मैं ये कहता हूं कि अपनी ताकत को पहचानो, अब बहुत दिन तुमको सोते हो गए। ये हिन्दुस्तान तुम्हारा है बड़े–बड़े लोगों का नहीं है, ये कैपेटलिस्टों का नहीं है या उन लोगों का नहीं है जो कैपेटलिस्टों से रुपया लेकर इलैक्शन लड़ते हैं, उनका नहीं है ये। ये तुम्हारा है, छोटे आदमियों का है, गरीबों का है, क्योंकि तुम्हारी संख्या सबसे ज्यादा है। इन शब्दों के साथ मैं अपना कथन समाप्त करता हूं। किसी को तकलीफ हुई हो, तो माफी चाहता हूं मैं।

मैं नारे लगाऊंगा तीन, मेरे साथ नारे लगा लीजिए फिर मुझे जाने की इजाजत दीजिए। भारतमाता की –जय, माहत्मा गांधी की जय, लोकदल–कांग्रेस की जय।

————————————————